एक सच्ची घटना

फुल बनी चिंगारी

मणिमाला

बिहार का नाम तो सबने सुना होगा। अपने देश का एक राज्य। इसका एक जिला है सुपौल। इसके अंदर एक थाना है त्रिवेणीगंज। इसमें एक गांव है हेमंतगंज। इस गांव में एक लड़की रहती है। नाम है फुल।

हरिजन है। कामगार भी। उसके भाई भी रिक्शा खींचते थे। मां भी मेहनत मजदूरी करती है। गरीब है। फुल की उम्र है सिर्फ पंद्रह साल। अभी बालिग भी नहीं। उसी से मिलवाते हैं आपको।

बहुत बहादुर लड़की है। आजकल उसकी बहादुरी की चर्चा है। लेकिन परेशान भी बहुत है। पहले बहादुरी की चर्चा करेंगे। फिर उसके दुख बांटने की कोशिश भी करेंगे।

बलात्कार की शिकार फुल ने बलात्कारी का लिंग दांतों से काट खाया। भाग कर पुलिस स्टेशन गई। बड़े अफसरों से मिली। उसने लड़ाई में हार नहीं मानी। आखिर, बलात्कारी गिरफ्तार हुआ और अब जेल में है।

वह काली रात

पिछले साल की बात है। सोलह नवंबर की रात का समय था। सो रही थी वह। कुछ गुंडे आये और उसे उठा कर ले गये। वह चिल्लाई। रोई। मदद को पुकारा। कोई नहीं आया। शायद सब सो रहे थे। या डर रहे थे।

उसे उठा कर वे थाने से थोड़ी दूर ले गये। वहां एक एम.एल.ए. था। उसके दो साथी भी थे। एम.एल.ए. का नाम है नारायण सरदार। वहां उन तीनों ने उस पर बलात्कार किया। फुलकुमारी ने बहुत कोशिश की अपने को बचाने की। लेकिन बचा न पाई। कहां तीन-तीन मुस्तंडे। कहां एक अकेली लड़की। **लेकिन बलात्कार होने के बाद भी वह हारी नहीं। दरअसल, यही बात मैं आप तक पहुंचाना चाहती हूं।**

दांत बने हथियार

बलात्कार के बाद भी बलात्कारी विधायक ने उसे नहीं छोड़ा। कैद रखा। वह समझ गई कि वे बार-बार बलात्कार करना चाहते हैं। वह तरकीब सोचने लगी। हुआ भी वही।

विधायक फिर बलात्कार करने लगा। लड़की ने उसके लिंग को काट खाया। उसके पास कोई हथियार न था। उसने अपने दांतों को ही हथियार बनाया। इतना गहरा जख्म दिया कि पूछिये मत। वह छटपटा उठा। उसके साथियों ने उसे सहरसा अस्पताल पहुंचाया। सत्रह टांके लगे। उसे मुंह छुपाने को जगह नहीं मिल रही थी।

लड़की भाग कर पुलिस स्टेशन पहुंची। लेकिन रिपोर्ट दर्ज नहीं हुई। एक विधायक के खिलाफ रिपोर्ट? वह भी एक पंद्रह साल की लड़की लिखवाए? पुलिस वाले डर रहे थे और डरा भी रहे थे। लेकिन लड़की ने हार नहीं मानी। वह लोगों से कहती फिरी। बड़े अफसरानों के पास गई। अखबार में खबर छपी। आखिरकार रिपोर्ट लिखी गई।

थोड़ी बहुत कार्रवाही भी हुई। सरदार जनता दल के टिकट पर चुना गया था। जनता दल ने उसे पार्टी से निकाला। मुकदमा शुरू किया। जेल भेजा। अभी वह जेल में है। जेल में उसे हर तरह की सुविधा मिल रही है। अच्छा खाना, अच्छा

कपड़ा और लोगों से मिलने-जुलने की छूट। विधायक जो है!

परेशानियां बढ़ीं

फुलकुमारी के सामने परेशानियां ही परेशानियां हैं। गांववालों ने उसका हुक्का-पानी बंद कर रखा है। सिर्फ उसका ही नहीं बल्कि पूरे परिवार का। जाति वाले उस पर उंगली उठा रहे हैं। जाति पंचायत वालों को लगता है लड़की ने उनकी इज्ज़त गंवाई है। गांव को बदनाम किया है। जाति को बदनाम किया है। उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। जो कुछ हुआ उसे चुपचाप बर्दाश्त करना चाहिए था। लड़कियों के साथ तो ऐसा होता ही है।

गुस्से में उन्होंने उसके भाई का रोजगार भी छीन लिया है। वह रिक्शा खींचता था। बंद करवा दिया है। उससे कोई बात नहीं करता। सब उसे ही दोषी मानते हैं।

पुलिस की नौकरी

हालांकि गांव के बाहर लोग-बाग उसकी बहादुरी की चर्चा करते हैं। बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने उसे ढाई हजार रुपए का ईनाम दिया। आई.जी. पुलिस ने भी उसे एक हजार रुपए का ईनाम दिया। लेकिन वह ईनाम नहीं,

फुल को सरकार ने ईनाम दिया।
पर वह ईनाम नहीं, पुलिस में नौकरी चाहती है
जिससे वह जुल्म रोक सके। वह खुद
भी बेखौफ़ जीना चाहती है।

पुलिस में नौकरी चाहती है। वह कहती है कि उसे पुलिस में नौकरी चाहिए ताकि जुल्म रोक सके। वह औरों पर ऐसा जुल्म नहीं होने देना चाहती। वह खुद भी बेखौफ जीना चाहती है।

अभी तक गांव में उसकी मदद को कोई नहीं पहुंचा है। सरकार ने पुलिस में नौकरी का भरोसा दिया है। नौकरी नहीं। नौकरी देने के लिए नियम बदलने पड़ेंगे। क्या आपको नहीं लगता कि नियम बदलना चाहिए। लेकिन उसे नौकरी जरूर मिलनी चाहिए। अगर लगता है तो क्यों नहीं उसकी मदद को आगे आते हैं? क्यों नहीं हम सब बिहार सरकार को लिखते हैं कि उसे पुलिस में नौकरी जरूर दी जाये।

फुल की मदद करना जरूरी है। उसने बलात्कार और बलात्कारी के खिलाफ लड़ने की एक राह दिखाई है। इस चिंगारी को जिंदा रखना जरूरी है। इसमें आग है। जलाने वाली नहीं, रोशनी देने वाली। □